HINDUSTAN TIMES

More on the Web
www.hindustantimes.com

IN THE SUPREME COURT

Life sentence for Niyogi killer

HT Correspondent
New Delhi, January 20

ALMOST 14 years after the sensational murder of trade union leader Shankar Guha Niyogi, the Supreme Court on Thursday commuted the death sentence awarded by the trial court to key accused Paltan Mallah to life imprisonment.

The Supreme Court thereby set aside a high court order acquitting all six accused in the case, including Mallah, and upheld a trial court order convicting him but commuted his sentence from death to life imprisonment.

The Supreme Court however upheld the high court decision to acquit the other five — Naveen Shah, Chandrakant Shah, Moolchand Shah, Avdesh Rai and Gian Prakash.

All of them were industrialists of Bhilai where Niyogi was agitating for better wages and working conditions for the labourers.

The high court had rejected the evidence against the accused as flimsy, thereby overturning the trial court order that had convicted them all and sentenced them to life imprisonment.

The Supreme Court bench that delivered the judgement included Justice K.G. Balakrishnan and Justice Tarun Chatterjee.

Story so far

- Shankar Guha Niyogi killed in Bhilai on September 27, 1991
- Trial court convicts all six accused — five industrialists and one hired killer — on June 23, 1997
- High Court acquits all six on June 16, 1998
- SC upholds HC acquittal of 5 industrialists but overturns killer's acquittal, hands him life term

TIMES OF INDIA

Niyogi murder case: Life sentence for main accused

TIMES NEWS NETWORK

New Delhi: Fourteen years after trade union leader Shankar Guha Niyogi was shot dead, the Supreme Court on Thursday ordered a life sentence for hired assassin Paltan Mallah, but upheld the acquittal of the other accused, all industrialists of the Bhilai area.

Though expressing surprise at the Madhya Pradesh High Court order acquitting Mallah, who was earlier sentenced to death for murdering Niyogi, the court reduced his sentence to life term.

Five other accused sentenced to life term by the trial court were connected with various industries like Kedia, Simplex or BEC. The apex court has, however, upheld their acquittal. They are: Moolchand Shah, Gyan Prakash Mishra, Avdhesh Rai, Abhay Kumar Singh and Chandrakant Shah.

CBI's counsel Amarender Sharan and Chhattisgarh Mukti Morcha's counsel S Murlidhar, who also argued for Niyogi's widow Asha, had sought exemplary sentence for the accused who had been sentenced by the trial court with death or life term and a fine of Rs 10 lakh each.

Life term for Guha Niyogi killer: Fourteen years after trade union leader Sankar Guha Niyogi was killed in Bhilai, the Supreme Court on Thursday upheld the Madhya Pradesh High Court order acquitting the owners of Simplex Industries but retained the life sentence awarded to his assailant Paltan Mallah. P8

नियोगी हत्याकांड में एक को उम्र कैद, बाकी पांच बरी

सहारा न्यूज ब्यूरो

नयी दिल्ली, 20 जनवरी। मशहूर मजदूर नेता शंकर गुहा नियोगी की हत्या के मामले में उच्चतम न्यायालय ने आज इस कांड के मुख्य अभियुक्त पल्टन मल्लाह को आजीवन कारावास की सजा सुनायी। इसके साथ ही उच्चतम न्यायालय ने मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के फैसले को बरकरार रखते हुए सिंप्लेक्स इंडस्ट्रीज के मालिकों को आरोप मुक्त कर दिया। शंकर गुहा नियोगी की चौदह साल पहले 27 सितम्बर 1991 को भिलाई में हत्या कर दी गयी थी। जिस समय उनकी हत्या की गयी उस समय वह अपने फ्लैट में सो रहे थे।

■ सत्र न्यायालय ने पल्टन मल्लाह को फांसी की सजा सुनायी थी पर हाईकोर्ट ने बरी कर दिया था

न्यायमूर्ति केजी बालाकृष्णन और न्यायमूर्ति एआर लक्ष्मणन की पीठ ने सीबीआई व शंकर गुहा नियोगी की पार्टी छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा की अपील पर सुनवाई करते हुए मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के आदेश को आंशिक रूप से संशोधित करते हुए एक अभियुक्त पल्टन मल्लाह को आजीवन कारावास की सजा सुनायी और अन्य पांच की रिहाई के आदेश को बरकरार रखा। अभियोजन पक्ष ने आरोप लगाया था कि शंकर गुहा नियोगी की हत्या की साजिश में उद्योग

(शेष पृष्ठ 12 पर)

नियोगी हत्याकांड में एक...

समूह के मालिक भी संलिप्त थे क्योंकि शंकर गुहा नियोगी उद्योग के मजदूरों को नियमित करने और उन्हें न्यूनतम निर्धारित मजदूरी देने के लिए संघर्ष कर रहे थे। मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय ने सभी छह अभियुक्तों को बरी कर दिया था। जिसमें पल्टन मल्लाह के अलावा उद्योगपति मूलचंद शाह, चंद्रकांत शाह तथा ज्ञानप्रकाश मिश्र, अवधेश राय व अभय कुमार सिंह थे। सत्र अदालत ने 23 जून 1997 के अपने आदेश में अभियुक्त पल्टन मल्लाह को फांसी की सजा सुनायी थी जबकि अन्य पांच अभियुक्तों को आजीवन कारावास की सजा दी थी। उच्चतम न्यायालय ने अपने फैसले में कहा कि यह वारदात 1991 में हुई थी, तब से लेकर अब तक सत्र अदालत द्वारा पल्टन मल्लाह को फांसी दिए जाने की सजा को बरकरार रखना ठीक नहीं है। उसे आजीवन कारावास की सजा दी जाती है, क्योंकि पल्टन मल्लाह के खिलाफ ठोस साक्ष्य है। इन साक्ष्यों के आधार पर उसके वारदात में शामिल होना साबित होता है। उसके पास से देशी पिस्तौल मिला था और फोरेंसिक रिपोर्ट व दो गवाहों के बयान उसके जुर्म में शामिल होने की बात को साबित करते हैं। उच्चतम न्यायालय ने कहा कि उच्च न्यायालय ने पल्टन मल्लाह को रिहा किए जाने के समय फोरेंसिक रिपोर्ट व इकबालिया बयान पर ध्यान नहीं दिया है, इस तरह से उच्च न्यायालय ने उसे बरी करने में भूल की है। उच्चतम न्यायालय ने बरी किए गए अभियुक्तों के बारे में कहा कि उनके खिलाफ प्रत्यक्ष व संतोषजनक साक्ष्य नहीं है, इसलिए उनकी रिहाई के आदेश को बरकरार रखा जाता है।